५) अशोक का लघु स्तम्भ लेख (रुम्मिनदेई)

मूलपाठ (रेखालिपि फलक-४)

१. देवानपियेन पियदसिन लाजिन वीसति वसाभिसितेन
२. अतन आगाच महीयिते हिद बुधे जाते सक्यमुनो ति [।]
३. सिला-विगडभी-चा कालापित सिलाथभे च उसपापिते
४. हिद भगवं जाते ति [।] लुंमिनिगामे उबलिके कहे (कटे)
५. अठभागिये च [।]

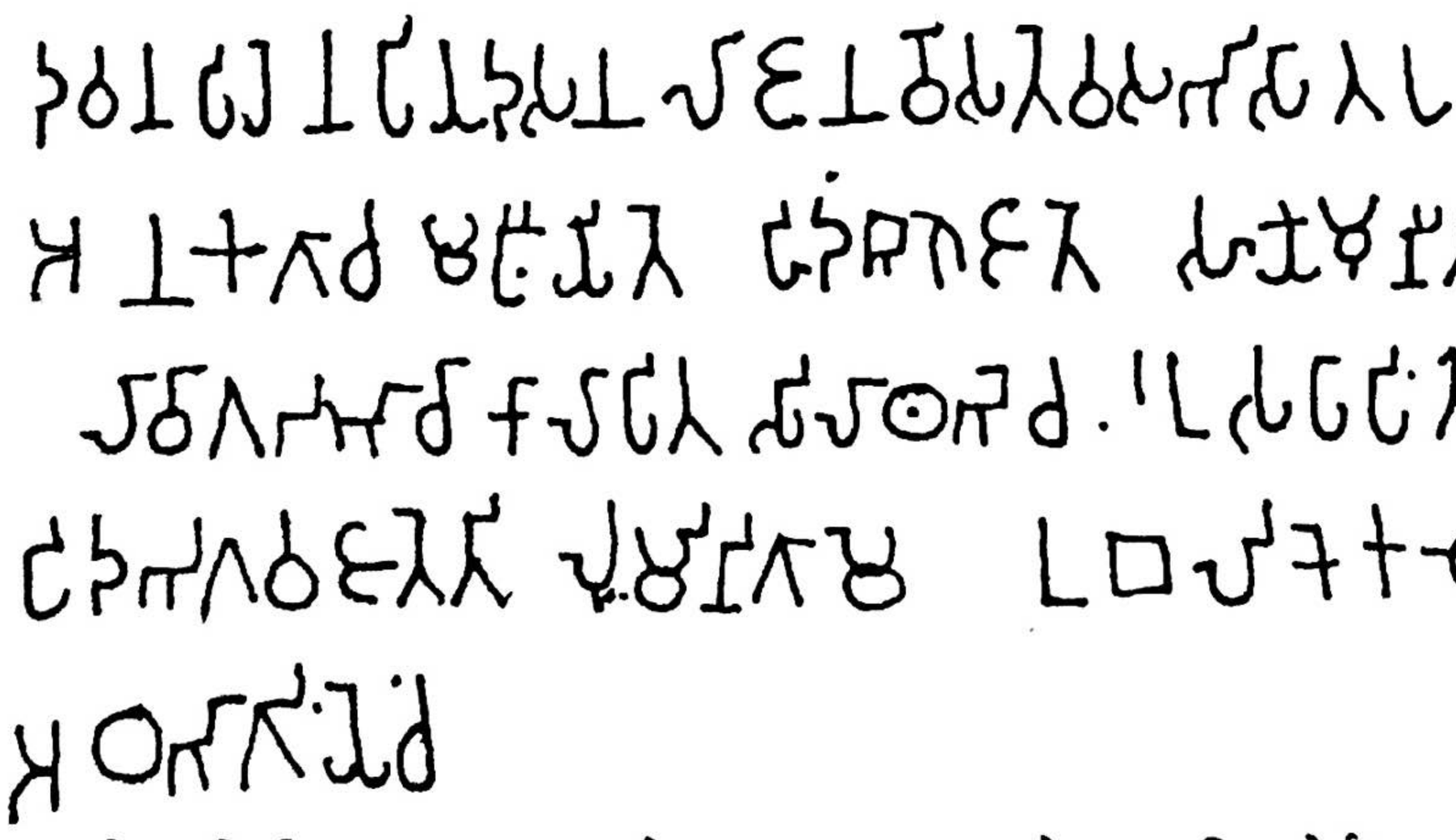

रेखालिपि फलक-४ अशोक का लघु स्तम्भलेख (रुम्मिनदेई)

हिन्दी अनुवाद—बीस वर्षों से अभिषिक्त देवानांप्रिय प्रियदर्शी राजा द्वारा स्वयं आकर (इस स्थल को) गौरवान्वित किया गया, क्योंकि यहाँ शाक्य मुनि बुद्ध उत्पन्न हुए थे। (उसने यहाँ) पत्थर की सुदृढ़ दीवार और पाषाण स्तम्भ स्थापित करवाया क्योंकि यहाँ भगवान (बुद्ध) उत्पन्न हुए थे। लुम्बिनी ग्राम को बलि (नामक कर से) मुक्त कर अष्टभागी बना दिया गया।

विवरण—रुम्मिनदेई नामक स्थान उत्तर-प्रदेश के बस्ती जिले के समीप नेपाल में है, जहाँ से यह स्तम्भ पाया गया है। इस स्तम्भ के निकट ही एक मन्दिर में बुद्ध के जन्म को दर्शाने वाली मूर्ति बनी है। इस मूर्ति का नामकरण गाँव निवासियों

द्वारा 'रुपमदेही' देवी किया गया है। इसी नाम के आधार पर यह ग्राम भी 'रूपमदेहि' कहलाता था, जिसका अपभ्रंश 'रुम्मिनदेई' हो गया है।

'सिला विगड भी' का अर्थ हुल्त्ज़ और शार्पेण्टियर ने विगड (अश्व) धारण करती हुई शिला से लगाया है। ब्यूलर इसे 'सूर्यचिह्न से अंकित शिला' और बरूआ 'युवाहाथी की मूर्ति से युक्त शिला' मानते हैं। वासुदेवशरण अग्रवाल ने इसे 'शिला विकट भित्तिका' अर्थात् 'पत्थर की सुदृढ़ दीवार' पढ़ा है। श्रीराम गोयल व अधिकांश विद्वान यही अर्थ स्वीकार करते हैं।

शुआन-च्वांग ने अपने विवरण में रुम्मिनदेई में अश्वशीर्ष वाले स्तम्भ का उल्लेख किया है, जो यही लघु लेख वाला स्तम्भ होगा। जिसका अश्व टूट चुका है।

इस लेख में बुद्ध के लिए 'भगवं' शब्द का प्रयोग किया गया है। बौद्ध धर्म में ईस्सरीय (ईश्वरत्व), धम्म (धर्म), यस (यश), काम (काम) तथा पयतन (प्रयत्न) धारण करने वाले को 'भगवान' माना गया है।

इस अभिलेख से अशोक की बौद्ध धर्मस्थलों की यात्रा का उल्लेख मिलता है। अशोक के आठवें शिलालेख में भी उसके राज्याभिषेक के दसवें वर्ष के पश्चात सम्बोधि की यात्रा कर धर्मयात्राओं को प्रारम्भ करने का उल्लेख है। ऐसा प्रतीत होता है कि धार्मिक स्थलों की यात्रा करने वाले यात्रियों को किसी प्रकार का कर देना पड़ता था, जो लुम्बिनी जाने वाले तीर्थ यात्रियों को भी देना पड़ता होगा। सम्भवत: अशोक ने इसी कर का प्रावधान समाप्त कर दिया।

वैदिक काल में विजित राजाओं तथा प्रजा द्वारा विजयी राजा को दिए जाने वाले भेंटोपहार बलि कहलाते थे, जो बाद में अनिवार्य हो गए होंगे। जिसे अशोक ने समाप्त कर दिया। भाग राजा द्वारा लिए जाने वाले उपज के षष्ठांश को कहते थे। कहीं-कहीं इसके चौथे-पाँचवें (अर्थशास्त्र) और चौथे (मेगस्थनीज़) भाग का उल्लेख भी किया गया है। सम्भवत: इसी कर को अशोक ने अष्टभागी कर दिया था।

अशोक का शिलाफलक लेख (बैराट)

मूलपाठ (रेखालिपि फलक-५)

१. प्रि (पि) यदसि लाजा मागधे (धं) संघं अभिवादेतूनं (अभिवादनं) आहा अपाबाधतं च फासुविहालतं चा [।]
२. विदिते वे भंते आवतके हमा बुधसि धंमसि संघसी ति गालवे (गलवे) चं (च) प्रसादे (पंसादे) च [।] ए केचि भंते
३. भगवता बुधेन भासिते सर्वे (सवे) से सुभासिते वा [।] ए चु खो भंते हमियाये दिसेया हेंवं सधंमे
४. चिलठितीके होसती ति अलहामि हकं तं वातवे (वतवे) [।] इमानि भते धंमपलियायानि विनयसमुकसे

रेखालिपि फलक-५. अशोक का शिलाफलक लेख (बैराट)

५. अलियवसानि (णि) अनागतभयानि मुनिगाथा मोनेयसूते उपतिसपसिने ए चा लाघुलो
६. वादे मुसावादं अधिगिच्य (अधिगिध्य) भगवता बुधेन भासिते एतानि भंते धंमपलियायानि इछामि
७. किंति बहुके भिखुपाये चा भिखुनिये चा अभिखिनं सुनेयु चा उपधालयेयू चा [।]
८. हेवंमेवा उपासका चा उपासिका चा [।] एंतेनि भंते इम लिखापयामि अभिप्रेतं मे (म) जानंत (जानंतु) ति [॥]

हिन्दी अनुवाद—मगध के राजा प्रियदर्शी ने संघ को अभिवादन करके कहा—(मैं आपके) स्वास्थ्य और सुख विहार की (कामना करता हूँ)। आप लोगों को विदित है (कि) बुद्ध, धम्म और संघ में मेरी कितनी श्रद्धा और अनुरक्ति है। भदन्तों! जो कुछ भी भगवान बुद्ध द्वारा भाषित है वह सब सुभाषित है। किन्तु भदन्तों! जो कुछ मुझे दिखाई देता है कि धर्म चिरस्थायी होगा, योग्य हूँ मैं उसे कहने को (अर्थात् उसे कहना या उसकी घोषणा करना, मेरा कर्तव्य है)। भदन्तों! ये धर्म पर्याय हैं—विनयसमुकस, अलियवसानि, अनागतभयानि, मुनिगाथा, मोनेयसूत, उपतिस पसिन तथा लाघुलोवाद में मुषावाद का विवेचन करते हुए भगवान बुद्ध द्वारा जो कुछ भी कहा गया है। भदन्तों! मैं चाहता हूँ इन धर्मपर्यायों को बहुसंख्यक भिक्षुपाद व भिक्षुणियाँ प्रतिक्षण सुनें और मनन करें। इसी प्रकार उपासक और उपासिकाएँ भी। भदन्तों! इसी प्रयोजन के लिए इसे लिखवाता हूँ कि लोग मेरे अभिप्राय को जान लें।

विवरण—यह शिलालेख प्राकृत भाषा में है और ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण करवाया गया है। यह शिलालेख १८४० ईस्वी में बर्ट को बैराट में प्राप्त हुआ था जो जयपुर से ४२ मील उत्तर-पूर्व में स्थित है। बैराट में ही कारलाइल को एक अन्य लघु शिलालेख भी प्राप्त हुआ था। यह शिलाफलक लेख (बैराट) एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल, कलकत्ता में सुरक्षित रखा हुआ है। इसीलिए इसे कलकत्ता बैराट शिलालेख के नाम से भी जाना जाता है।

इस लेख से अशोक की बुद्ध, धर्म और संघ में पूर्ण आस्था का ज्ञान प्राप्त होता है। इन तीनों का एक साथ प्रयोग बौद्ध धर्म का प्रवज्या मंत्र है। इससे यह प्रमाणित किया जाता है कि अशोक ने निश्चित रूप से बौद्ध धर्म अंगीकार कर लिया था। इस लेख में अशोक ने बौद्ध भिक्षु-भिक्षुणियों और उपासक-उपासिकाओं के श्रवण, मनन एवं अध्ययन हेतु कुछ बौद्ध ग्रन्थों का उल्लेख किया है। ऐसा प्रतीत होता है कि अशोक के समय तक पिटक, निकाय आदि अपने वर्तमान स्वरूप को नहीं प्राप्त कर सके थे। यहाँ अशोक द्वारा प्रयुक्त धंमपलियायानि 'धर्मपर्यायाणि' से तात्पर्य बुद्ध द्वारा निर्देशित धम्म के किसी पक्ष

पर प्रदत्त तर्क संगत उपदेश से है। इन धर्मपर्यायों में बुद्ध वचन सूक्तों के रूप में संग्रहीत थे। अशोक ने कुछ प्रमुख सूक्तों का चयन कर उन्हें जन-सामान्य में लोकप्रिय बनाने की चेष्टा की। अशोक द्वारा निर्देशित ये धर्मपर्याय ग्रंथ कौन से थे इस विषय में विद्वानों में अनेक मतभेद हैं।

इस संदर्भ में विभिन्न विद्वानों के भिन्न-भिन्न मत इस प्रकार हैं—

१. **विनय समुकस** (विनय समुत्कर्ष)—एस०एन० मिश्र के अनुसार दीर्घनिकाय का सिगालोवाद सुत्त है। भण्डारकर ने इसे सुत्तनिपात का तुवट्टकसुत्त माना है। अन्य विद्वान पातिमोक्ख, अंगुत्तर का अट्ठसवग्ग, धम्मचक्कपवत्तन सुत्त या मज्झिम निकाय का सप्पुरिस सुत्त मानते हैं।

२. **अलिवसानि** (आर्यवंशा या आर्यवासा:)—बरुआ, भण्डारकर और कौशाम्बी के अनुसार यह अंगुत्तर, २ का महाअरियवंस और रिज डेविड्स के अनुसार अंगुत्तर, ३ का अखियास है।

३. **अनागतभयानि**—बरुआ के अनुसार आगुत्तर, ३ में है।

४. **मुनिगाथा**—इसे बरुआ सुत्तनिपात का मुनिसुत्त मानते हैं। दिव्यावदान में इसे मुनिगाथा ही कहा गया है।

५. **मोनेयसूत्त** (मौनेयसूत्रम)—कौशाम्बी, भण्डारकर और सरकार के विचार से यह 'सुत्त निपात' का 'नालकसुत्त' है। रिज़ डेविड्स 'इतिवत्तुक का लघु मौनेयसुत्त' मानते हैं।

६. **उपतिस पसिने** (उपतिष्य प्रश्न)—भण्डारकर व सरकार के अनुसार यह मज्झिमनिकाय का 'रथविनीतसुत्त' है। राजबली पाण्डेय इसे सुत्तनिपात का सारिपुत्तसुत्त मानते हैं, क्योंकि उपतिस का ही दूसरा नाम सारिपुत्त था।

७. **लाहुलोवाद** (राहुलवाद)—सेना के अनुसार मज्झिम, २ का 'अम्बलट्ठिक लाहुलोवाद' है। जबकि इसके अतिरिक्त महाराहुलवाद और चूल (लघु) राहुलवाद भी थे जो निश्चय ही अशोक को ज्ञात रहे होंगे।

अशोक द्वारा निर्देशित ग्रन्थों के अनुशीलन से यह स्पष्ट है कि उसने दार्शनिक या कर्मकाण्डीय धर्म की अपेक्षा नैतिक धर्म की ओर प्रजा को उन्मुख करने का प्रयास किया। इनमें से किसी भी ग्रन्थ में बाह्य आचरण या बाह्य अनुशासन में रूचि नहीं ली गई है, इसीलिए उसने न केवल भिक्षु-भिक्षुणियों बल्कि सामान्य-जनों से भी इसे सुनने का अनुरोध किया है। अनागतभयानि में भविष्य के भयों से सावधान रहने का और राहुलवाद में दीक्षा के समय व उसके पश्चात मन-वचन और काया को नियन्त्रण में रखने का प्रयास करने का उपदेश दिया गया है।

यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि अशोक के काल तक ये ग्रन्थ पुस्तक के रूप में नहीं थे। इनकी भाषा मागधी प्राकृत कही जाती है।